883/873

दैनिक जागरण
जागरण सिटी
पृ० 4
02-06-2014

चारे की फसल की बुवाई का सही समय

गर्मी के मौसम में हरे चारे की किल्लत बड़ी समस्या होती है। इसका सीधा असर पशुओं की दुग्ध उत्पादन क्षमता पर पड़ता है। इस समस्या को देखते हुए किसानों को सलाह दी जाती है कि जिन खेतों में सिंचाई की पर्याप्त सुविधा है, वहां किसान हरे चारे से जुड़ी फसलों की बुवाई का कार्य शुरु कर सकते हैं। हरे चारे के लिए ज्वार, बाजरा व मक्का की बुवाई की जा सकती है। बुवाई से पहले किसान बीज को भिगोकर रख दें। बुवाई शाम के समय की जानी चाहिए।

वैज्ञानिकों का कहना है कि जून के प्रथम सप्ताह से लंबी अवधि में तैयार होने वाले धान के पौध की रोपाई शुरू की जा सकती है। एक एकड़ में धान की खेती के लिए किसान को कम से कम 200 वर्गमीटर क्षेत्र में पौध तैयार करना चाहिए। पौध तैयार करने से पहले किसान को उपयुक्त बीज का चयन कर उसे उपचारित करना चाहिए। वैज्ञानिकों का कहना है कि जब तक बीज उपयुक्त प्रजाति व स्वस्थ नहीं होगा, तब तक उससे अच्छे पैदावार की आशा नहीं की जा सकती है। जिन किसानों ने धान की पौधशाला तैयार कर ली है, वह पौधों में सुबह व शाम के समय नियमित रूप से पानी दें। लेकिन ध्यान रखें कि दोपहर में पानी की जड़ों में पानी इकट्ठा नही हो सके। इससे पौधों में गर्मी से जुड़ी समस्या हो सकती है।

इस मौसम में अगेती फूलगोभी की पौधशाला बनाया जाना चाहिए। पौधशाला को 20 से 30 माइक्रोन की मोटाई वाले प्लास्टिक से ढककर सूर्य तापीकरण करें। इस प्रक्रिया से जमीन में रहने वाले जीवाणु, जो पौध में रोग के कारण हो सकते हैं, नष्ट हो जाते हैं। यह समय टमाटर, हरी मिर्च और बैंगन की पौधशाला बनाने के लिए उपयुक्त है। पौधशाला के लिए किसानों को कीट अवरोधी नायलोन की जाली का प्रयोग करना चाहिए। इससे रोग फैलाने वाले कीट से फसल को बचाया जा सकता है। किसान कद्दू वर्गीय सब्जियों में फलमक्खी की निगरानी करते रहें। इससे बचाव के लिए मिथाइल यूजीनोल ट्रेप का प्रयोग किया जा सकता है। फलमक्खी के लक्षण पाए जाने पर इंडोसल्फान 35 ईसी की दो मिलीलीटर मात्रा व दस ग्राम चीनी या गुड़ को एक लीटर पानी में मिलाकर घोल तैयार करें। एक हेक्टेयर खेत में करीब 50 लीटर तैयार घोल का छिड़काव करें। अरहर की बुवाई के लिए खेत की तैयारी करें। बीज किसी प्रमाणित स्रोत से ही खरीदें। बीजों को बोने से पहले अरहर के लिए उपयुक्त राइबोजियम तथा फास्फोरस में घुलनशील बैक्टेरिया से उपचारित करें। इस उपचार से बीजों में अंकुरण तथा उत्पादन मे वृद्धि होती है। अरहर की किस्मों में पूसा 2001, पूसा 991, पूसा 992, पारस मानक, यूपीएएस 120 उपयुक्त है। इस मौसम में बेलवाली फसलों में न्यूनतम नमी बनाए रखें। मिट्टी में कम नमी होने से फूल लगने व परागण पर असर पड़ेगा। इससे फसल उत्पादन में कमी आ सकती है। मिर्च के खेत में विषाणु रोग से ग्रसित पौधों को उखाड़कर जमीन में गाड़ दें। उसके बाद इमिडाक्लोप्रिड का खेत में छिड़काव करें। भिंडी की फसल में तुड़ाई के बाद यूरिया पांच से दस किलोग्राम प्रति एकड़ की दर से खेत में डालें। इसके बाद सिंचाई करें। किसानों को अपने खेतों में मेड़ बनाने का कार्य शुरू कर देना चाहिए, ताकि बारिश का पानी इकट्ठा हो सके।

प्रति लिपि:-
1. निदेशक कार्यालय
2. संयुक्त निदेशक (प्रसार)
3. अधिष्ठाता/संयुक्त निदेशक (शिक्षा)
4. प्रभारी, यू एस आई
5. प्रभारी कैटैट
6. प्रभारी पी-पी-आई

सुनीला गुप्ता 2/6/14
प्रभारी पत्रिका एवं समाचार पत्र अनुभाग